R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 26वें वर्ष में प्रवेश

# शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

## साधना खरे विशेषांक

वर्ष 26 | अंक 1 | रविवार, इलाहाबाद, 24 मई 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

## इस बार साधना खरे

**उमेश श्रीवास्तव**
संपादक

मात पिता की परम दुलारी ,
साधना खरे हैं नाम ।
बहराइच में जन्म हुआ था ,
अब प्रयागराज है धाम ।
कविता में भावों का गुंठन,
गद्य रचना सुदृढ़-सुदृढ़ ।

तो बात हो रही है साधना खरे की । सहज सरल और मृदभाषी साधना खरे की रचनाओं में देश जगत की सुंदर बातों का चित्रण मिलता है । अपनी सहज अभिव्यक्ति के चलते इनकी रचनाओं में जीवन के सुदृढ़ पक्षों का सुंदर चित्रण दिखाई देता है । कवयित्री साधना खरे की कविताओं में अपने देश के प्रति अमिट लगाव है । कृषि प्रधान देश की चर्चा करते हुए वह काफी विभोर हो उठती है। मां जगत-जननी के प्रति भी कवयित्री साधना खरे का भाव अपरमित है। भावों की सरल अभिव्यक्त की कुछ बानगी देखिए ।

पहले बानगी

> जय हो सरस्वती मैया,
> जय हो वीणा वादिनि मैया
> हमको ऐसा वर दो
> पार कर सकूं जीवन नैया।
> जय हो -----

दूसरी बानगी

> तार-तार हो चुके रिश्तों के लिए
> हो सके तो सुई धागा बन जाओ।
> रिश्तों को अधिक गहराई देने के लिए,
> हो सके तो मजबूत नींव बन जाओ।

तीसरी बानगी

> माता -पिता शारीरिक अंग दिमाग के समान हैं,
> ये न हो तो शरीर पंगु हीनता का शिकार है।

अप्रैल माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है । अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया अवश्य दीजिए ।

अंत में -

**सुखद भोर की सुंदर बातें,**
**बीत रही सुंदरतम रातें।**
**सही बताती जीवन गाथा,**
**इसी में समझो सबकुछ आता ।**

**- उमेश श्रीवास्तव**

❖ जीवन संघर्ष

# आत्म संघर्ष

**साधना खरे**
कवयित्री

मेरा जन्म 30 जून 1972 में मोहल्ला शखय्यापुरा, जिला बहराइच उत्तर प्रदेश में शिक्षक स्वर्गीय श्री सुरेश प्रसाद खरे और माता स्वर्गीय लक्ष्मी देवी के घर पांचवीं संतान के रूप में हुआ था। मेरे जन्म से पूर्व मेरे पिता महाराज सिंह इंटर कॉलेज में ही लाइब्रेरियन थे। इंटर और आई जी टी बाम्बे ड्राइंग और डिजाइन में डिप्लोमा होल्डर होने के कारण मेरे जन्म के कुछ एक-दो माह बाद ही मेरे पिता प्रोन्नति पाकर उसी विद्यालय में एल टी ग्रेड में कला अध्यापक नियुक्त हो गये और तब से जून 1994 रिटायरमेंट तक अंग्रेजी व कला विषय पढ़ाते रहें। मेरे पिता कला और अंग्रेजी के बेहतरीन शिक्षक होने के साथ- साथ बेहतरीन गद्य लेखक, भजन-गजल रचनाकार, और हास्य व्यंग कार थे। बहराइच जिले में प्रकाशित होने वाले दो स्थानीय समाचार पत्र के वर्ष -2008 तक मुख्य सम्पादक रहे। मेरी मां बहुत ही सरल सहज, कर्तव्य निष्ठ, धर्म परायण, मिलनसार और संत प्रवृत्ति की कुशल गृहिणी थीं।मेरे सदैव हंसते रहने के कारण वे मुझेङगोभी का फूलङ कहकर पुकारती थी और अपने से पहले अन्य के बारे में सोचने और करने के कारण मुझे दूसरा नामङसाधूङ कहकर पुकारती थी। सबसे छोटी होने के कारण मैं विशेष रूप से मां की बहुत लाडली और चिपकू थी। मेरी प्राथमिक शिक्षा श्री दिगंबर जैन स्कूल, इंटर तक की शिक्षा तारा महिला इंटर कॉलेज, कला स्नातक और परास्नातक (समाज शास्त्र) तक की शिक्षा महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय और बीएड की शिक्षा किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय बहराइच जिले में सम्पन्न हुई।

मेरा लेखन जगत में प्रवेश 1995में हुआ। समसामयिक विषयों पर मेरे बहुत सारे छोटे -बड़े लेख विभिन्न समाचार पत्र -पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे। वर्ष 1999 तक मैं जो भी छोटे- बड़े लेख लिखती उसे मेरे पिता एक शिक्षक की तरह विषय से भटकने पर बड़ी तेज डांटते, बड़ी बारीकी से जांचते, और सुधार करवाते तब जाकर मैं अपने लेख समाचार पत्र -पत्रिकाओं में छपने भेज पाती थी।

सारे पुख्ता सबूत होने पर भी मई 1998 में बड़ी छावनी,अयोध्या जी के ट्रस्ट की सम्पत्ति वाले घर का मुकदमा मेरे पिता जी जिला सत्र न्यायालय में हार गए, एक साल तक उच्च न्यायालय से इस आदेश पर कोर्ट स्टे नहीं ले पाये और उस घर को जुलाई 1999 में खाली करना पड़ा। उस पर सबसे बड़े आश्चर्य की बात यह कि जिस दिन घर खाली किया गया उसके अगले ही दिन लखनऊ उच्च न्यायालय से हमारे फेवर में स्टे आर्डर हो गया और हम सब पुनःउस घर में नहीं घुस पाए जिस घर में तीस से साल से रह रहे थे । शायद भ्रष्टाचार, कुशासन और हम सबकी विकट स्थिति इसका कारण था।मेरे पिता यह केस अयोध्या जी के ट्रस्ट की ओर से लड़ रहे थे।घर पर ट्रस्ट का कब्जा न होकर धोखाधड़ी करने वाले पड़ोसी वकील का कब्जा हो गया। फरवरी 1999 में मां के कंधे की बड़ी गांठ की शल्य चिकित्सा हुई और इसी साल जुलाई में मां के पूरे दाहिने अंग पर पक्षाघात हो गया एवं वे पूरे तीन दिन कोमा में रहीं। घर में सब बड़े भाई भाई-बहनों के विवाह होने, निजी व सरकारी सेवा में होने, बहराइच जिले से अन्यत्र दूर शहरों में रहने और उन भाई बहनों के बच्चों की पढ़ाई के कारण वे सब भाई बहन कम ही घर आ पाते थे अतः पूरी घर गृहस्थी के साथ मां को बराबर लखनऊ न्युरो सर्जन को दिखाने और सेवा सुश्रुषा का परम सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। जनवरी 2001 में मां अपनी मृत्यु तक पूर्ण स्वस्थ नहीं हो सकीं और अन्य बीमारी से भी पीड़ित रहीं फिर भी वे अपना खुद का सारा काम धीरे-धीरे कर लेती थी और इतने पर भी रसोई में जबरदस्ती घुस कर हम सब को कुछ न कुछ स्वादिष्ट पकवान बनाकर खिलाती थी। इतने पुराने निवास स्थान से निष्कासन , मां की बीमारी और मृत्यु ने विशेष रूप से हम पिता -पुत्री को बुरी तरह से तोड़ दिया। पिता जी भी और अस्वस्थ व चिड़चिड़े हो गये। एक साल पूरा मैं माइग्रेन (अधकपाली) से पीड़ित रही। हम पिता पुत्री बहराइच शहर के मुख्य रेलवे स्टेशन के पीछे निज निवास नई बस्ती बक्शीपुरा में रहने लगे जो कि मुख्य शहर से तीन -चार किलोमीटर दूर था। वहां हम सबको सामंजस्य स्थापित करने और रमने में बहुत कठिनाई हुई। पिता जी वहां पर भी दसवीं और बारहवीं के बच्चों को नियमित अंग्रेजी का ट्यूशन पढ़ाने लगे। उन्ही वर्षों में पिता जी ने बहराइच से एक हास्य व्यंग की और दिल्ली से भजनरामनामी-गजलरामनामी नामक पुस्तक प्रकाशित करवाई। मैं भी घर पर ही आठवीं कक्षा तक के बच्चों को नियमित अंतराल पर ट्यूशन पढ़ाने लगीं और सहारा कम्पनी में अभिकर्ता के रूप में कार्य करके थोड़ा बहुत धनार्जन करने लगी। मई 2004 में पिता जी के जांघ की हड्डी में गहरी टूट फूट हो गई। लखनऊ में शल्यचिकित्सा के द्वारा पैर में रॉड डाला गया और पिता जी को पुनः ठीक से चलने में पांच छः महीने लग गए तब तक हम पिता पुत्री लखनऊ दूसरे वाले बड़े भाई के घर रहें । इन्हीं सालों में मैने सरकारी नौकरी हेतु बहुत सारे फ़ार्म डाले और परीक्षाएं देती रही। मेरे पिता जी परीक्षाओं की तैयारी में अंग्रेजी व गणित में विशेष मदद करते रहते। किंतु कुछ न कुछ अंको से चयन रुक गया।

6 जून 2009 में मेरा विवाह स्वर्गीय श्री गंगा प्रसाद खरे (सेवा निवृत्त कर्मचारी ए जी आफिस) और स्वर्गीय लीलावती खरे के चौथे पुत्र श्री मुकेश कुमार खरे जी से हो गया जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संबद्ध डिग्री कॉलेज चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय में अस्थाई कर्मचारी थे। जन्म दात्री मां की मृत्यु के बाद मुझ मातृ विहीन को सासू मां के रूप में एक बार फिर से मां की प्राप्ति हुई। बिलकुल मेरी जन्म दात्री मां का दूसरा रूप। मैं घर गृहस्थी में व्यस्त हो गयी । हर समय पूरा घर हरा भरा रहता था।मेरी सासू मां अन्य सभी जेठानियों और देवरानियों का नाम लेकर पुकारती थी या दुलहिन कह कर संबोधित करती थी किन्तु विवाह के दो से तीन माह बाद ही और अपनी मृत्यु तक वे मुझे बिटिया कह कर ही संबोधित करती थी। दिसम्बर 2010 में मुझे एक बार फिर से मातृ विछोह /मां के देहांत का सामना करना पड़ा और फरवरी 2011 में पिता श्वसुर का भी देहांत हो गया।

दो महीने के अंतराल में सासू मां और पिता तुल्य श्वसुर के निधन से हमारा पूरा परिवार एक साल तक बहुत ही व्यथित रहा। यहां पर भी मैं कुछ बच्चों को नियमित अंतराल पर ट्यूशन पढ़ाने लगी। अगस्त 2011 से 2017 तक हम पति-पत्नी इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संबद्ध डिग्री कॉलेज-- सी एम पी की लॉ शाखा में वार्षिक और सेमेस्टर परीक्षाओं में कक्ष निरीक्षक का काम करते रहे,जब जब इन कालेजों में सरकारी सेवा भर्ती परीक्षाएं होती हम दोनों कक्ष निरीक्षक की ड्यूटी कर थोड़ा बहुत धनार्जन करते रहे और इसी बीच सहारा कम्पनी में पुनः अभिकर्ता ( फील्ड एजेंट) के रूप में मैंने ज्वाइन कर लिया और इसका अधिकतम काम पति देव जी करते थे। बाद में सारी प्रवेश परीक्षा और अर्ध व सरकारी सेवा भर्ती परीक्षाएं आनलाइन हो जाने से हम दोनों को काम मिलना बंद हो गया। किंतु परम सौभाग्य से मई 2015 में मेरे पति देव सी एम पी डिग्री कॉलेज में स्थायी कर्मचारी के रूप में नियुक्त हो गये यानि परमानेंट हो गये। अगस्त 2010 के 2017 मध्य कुछ काम्प्लिकेशन्स के कारण मुझे तीन बार असमय गर्भपात का सामना करना पड़ा और हम दोनों संतान सुख से वंचित रह गए। मैं पुनः बहुत से रोगों ग्रस्त रहने लगी।

फिर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का युग आ गया। एक बार फिर से वर्ष 2015 से सम सामयिक विषयों पर

शेष पृष्ठ 2 पर ...

साधना खरे
विशेषांक

हिंदी साप्ताहिक शहर समता

❖ कवितायें

**साधना खरे**
कवयित्री

## श्री गणेश स्तुति

हे गजानन जय देव जय देव,
हे गणपति बप्पा जय देव जय देव।

मां द्वारा निर्मित स्व शरीर पाया,
मातृ आज्ञा रक्षार्थ शीश कटाया,
इसीलिए वह गजानन कहलाया।
जय देव जय देव ---------

पितृ आज्ञा रक्षार्थ परशू से दंत गंवाया,
इसीलिए तू एक दंत कहलाया।
जय देव जय देव ---------

विश्व विनायक बुद्धि बल प्रदाता,
तिलक,त्रिपुंड, सिंदूर मन को है भाता।
जय देव जय देव ----------

स्वर्ण मुकुट सुंदर पीताम्बर धर्ता,
मोदक प्रिय मुद मंगल कर्ता।
जय देव जय देव -----

कमजोर मूषक को स्व वाहन बनाया,
हर प्राणी को अपना आश्रय/सहारा में लिया।
जय जय जय जय देव ---------

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड छोड़ माता-पिता पूजा,
सप्त परिक्रमा पूर्ण कर प्रथम पूज्य कहलाया।
जय देव जय देव ------

हे गजानन जय देव जय देव,
हे गणपति बप्पा जय देव जय देव

## मां सरस्वती वंदना

जय हो सरस्वती मैया,
जय हो वीणा वादिनि मैया
हमको ऐसा वर दो
पार कर सकूं जीवन नैया।
जय हो -----

सभी छः कुप्रवृत्तियों को सब भक्तों से दूर रख,
सदैव रचनात्मक कार्यों में उन्हें संलिप्त करो।
जय हो ---------

सब विद्या, कलाओं की दात्री करूणा मयी नेत्रों वाली,
धन सम्पत्ति हर विद्या व कला में
भारत देश को समृद्ध करो।
जय हो---

ज्ञान, विद्या बुद्धि के द्वारा सभी लोगों का भला कर सकूं,
थोड़ी धन सम्पत्ति के साथ ही सबके हृदय पर राज
कर सकूं।
जय हो सरस्वती ----

नाम अपार दानव भक्षियों से हर प्राणी की रक्षा करो,
भूत प्रेत बाधा या दुःख में मैया दरिद्रता कष्ट दूर करो।

जय हो सरस्वती मैया
जय जय हो वीणा वादिनि मैया
हम सबको ऐसा वर दो पार कर सकूं जीवन नैया।

## करणीय (करने योग्य)

तार-तार हो चुके रिश्तों के लिए
हो सके तो सुई धागा बन जाओ।
रिश्तों को अधिक गहराई देने के लिए,
हो सके तो मजबूत नींव बन जाओ।
सम्बंधों को छत की छांव देने के लिए,
हो सके तो चौतरफा खम्बा और दीवार बन जाओ।
छत को अधिक मजबूती देने के लिए,
सत्यमिष्ठ वाणी का सही अनुपात बन जाओ।
संबंधों में पड़ी दरारों को भरने के लिए,
हो सके तो फेवीकोल एमसील बन जाओ।
सम्बंधों को घायल होने से बचाने के लिए,
हो सके तो मजबूत ढाल बन जाओ।
रिश्तों को तोड़वाने में लगे लोगों के लिए,
नियंत्रित वाणी की तलवार बन जाओ।

वर्ग,वर्ण जाति, धर्म और देशद्रोहियों के लिए
हो सके तो गोला बारूद बन जाओ।

मानवता रुपी मानव धर्म की रक्षा के लिए,
हो सके तो एक मजबूत इंसान बन जाओ।
वर्तमान का मानव जन्म सफल बनाने के लिए,
दुर्बलतम प्राणी का भी सहारा बन जाओ।
परमपिता परमेश्वर का दर्शन करने के लिए,
पहले माता-पिता और गुरुजनों का महत्व समझ जाओ।
मरने मारने के तरीकों को अपनाने से पहले,
जन्म देने वाले और पालक माता-पिता का दर्द समझ
जाओ।
किसी को भी फरिश्ता और भगवान मानते से पहले,
हर प्राणी में भी है जान इतना समझ जाओ।
किसी पर भी जहरीली शब्दों और वस्तुओं के प्रहार से
पहले ,
हो सके तो जरा खुद पर भी आजमा डालें।

## शून्य एक अर्थ अनेक

शून्य बहुत जरूरी है, शून्य बहुत मजबूरी है।
शून्य घटत मजदूरी है, शून्य बढत अमीरी है।
शून्य बिना गिनती न बढ़ी है,
शून्य बढत अयोग्यता बढ़ी है।

शून्य बढ़त पौरुषत्व बढ़ा है,
शून्य समझ स्त्री जीवन सुखी है।

शून्य घटत भोगी वृत्ति बढ़ी है,
शून्य घटत योगी वृत्ति बढ़ी है।

शून्य --कम अंको के साथ ही पुस्तकीय और तकनीकी
ज्ञान की कमी
शून्य --योग्य , शून्य --- अपने को अज्ञानी समझना,
शून्य -- ध्यान,योग और प्राणायाम

## देश भक्ति से युक्त नारे

वर्ग,वर्ण,जाति,धर्म और पंथ,
सब भूलकर रखें देश को प्रथम।

अनेक होते हुए भी एक रहें हम,
ताकि शत्रु पक्ष का निकल जाये दम।

हर क्षेत्र में मिल जुलकर मेहनत करें हम
ताकि सोने की चिड़िया फिर से बनें हम।

समय की कीमत को सदैव समझें हम,
हर कार्य सीख भारत को विश्व गुरु बनाये हम।

परम्परा और आधुनिकता का करें मिश्रण,
आओ मिलकर भारत को पूर्ण विकसित देश बनाये हम।

अमेरिका,चीन,जापान, ब्रिटेन, फ्रांस
रूस हैं आगे हरदम,
इन सबसे है ढाई गुनी जनसंख्या
फिर भी भारतीय पीछे हर दम।

आओ मिलकर इसका कारण ढूंढते हैं हम,
हर समस्या का समाधान मिलकर निकाले हम।

आओ भारत की मानव शक्ति को सार्थक करें हम,
व्यर्थ न अपना बर्बाद करें हम।

परम्परा और आधुनिकता का मिश्रण --- भारत की
समृद्ध सांस्कृतिक, आर्थिक,चिकित्सीय, वास्तुकला और
वर्तमान समय की तकनीक का मिश्रण

अमेरिका चीन ------भारतीय पीछे हर दम ----- विश्व
स्तरीय किसी भी प्रतिस्पर्धा में कुछ को छोड़कर
भारतीयों का प्रथम दस स्थानों पर न होना

## मेरा देश

मेरा प्यारा भारत देश, इसमें रहते लोग अनेक ।
ओ मेरे देश रे,ओ मेरे देश रे

ये है कृषि प्रधान देश, इसके नायक कृषक अनेक ।
ओ मेरे देश रे,ओ मेरे देश रे

इसमें है पर्व -त्यौहार अनेक, जिसके हैं तौर-तरीके
अनेक।
ओ मेरे देश रे,ओ मेरे देश रे

इसमें हैं रस्म रिवाज अनेक, जिसमें हैं वेशभूषा अनेक।
ओ मेरे देश रे,ओ मेरे देश रे

इसमें भाषाएं हैं अनेक,आपस में झलके केवल प्रेम।
ओ मेरे देश रे,ओ मेरे देश रे

इसमें हैं धर्म पंथ अनेक,
जिसमें बल शाली देश भक्ति एक।
ओ मेरे देश रे,ओ मेरे देश रे

इसमें हैं भू-क्षेत्र/नदियां पहाड़ अनेक,
जिसमें सबकी जन्म भूमि एक।
ओ मेरे देश रे,ओ मेरे देश रे

अनेकता में एकता का देता संदेश
जिसमें बसती है सबकी सांसें/जानें।
ओ मेरे देश रे,ओ मेरे देश रे

मेरे प्यारा भारत देश, इसमें रहते लोग अनेक।
ओ मेरे देश रे,ओ मेरे देश रे

## मनोकामना

मानवता की बस्ती बसा लूं हर कहीं,
नर्क में भी स्वर्ग जैसी अनुभूति लें सभी।

यदि पुनर्जन्म धारण करना पड़े ही,
भारत मां की गोद से सर्वोत्तम जगह नहीं।

आसुरी वृत्तियों की प्रार्थना न सुनना कभी,
हे औढर दानी! इन्हें कोई वरदान न देना कभी।

असुरों दैत्यों की तो है सबसे दुश्मनी,
मानव देवी देवता हों चाहे परमेश्वर भी।

## साधारण मानव,साधू हों या ऋषि मुनि,

साधारण मानव,साधू हों या ऋषि मुनि,
असुर -दैत्य मचाते हैं तबाही और सबकी लेते बली।

विश्व ब्रम्हांड में कोई जगह इनसे बची नहीं,
देवी देवताओं को भी स्वर्ग स्थान खाली करनी पड़ी।

अपने -अपने क्षेत्रों के विशेषज्ञ थे यह सभी,
फिर भी सभी को परमेश्वर की शरण लेनी ही पड़ी।

स्वर्ग में निवास स्थान प्रमाण -पत्र मिलता है अस्थाई,
ईश दरबार में निवास स्थान प्रमाण- पत्र
चाहिए स्थायी।

यदि एकेश्वरवाद का सिद्धांत है बिलकुल सही,
तो आत्मा का परमात्मा में मिलन बिलकुल सही।

स्वर्ग में निवास स्थान प्रमाण-पत्र मिलता है अस्थाई
--पुण्य नष्ट होने पर पुनर्जन्म निश्चित होता है।

## समय

समय नहीं है बेमोल, समय बड़ा है अनमोल।
न समझें तो कुछ भी नहीं कर पाओगे बहन -भैया,
समझ गए तो एक दिन कुछ बन जाओगे बहन- भैया।

एक एक मिनट भी बड़ा बेहिसाब है बहन -भैया,
नैनो सेकेंड का भी बड़ा महत्व है बहन भैया।

न समझें तो यह हिसाब लेगा बहन-भैया,
समझ गए तो पल भर में ही पार लगेगी नैया।

घड़ी में बंद सेल की तरह न बनों बहन भैया,
कोई नया सेल तुमसे भी आगे बढ़ जायेगा।

शरीर में पड़े बंद सेल को चार्ज करते रहो बहन -भैया,
उन्नति में पड़ती हर बाधा को दूर करते रहो बहन-
भैया।

समय को बर्बाद मत करो बहन- भैया,
बहुत ही बड़ी कीमत है इसकी बहन-भैया।

न समझें तो हो जाओगे बर्बाद बहन भैया,
सुकर्म किये तो पल भर में चमकेगा भाग्य बहन -भैया।

पल -पल अपने रुप रंग में परिवर्तन करता है बहन
-भैया,
सुख- दुख में मदहोश न बनो वक्त कहता है बहन
-भैया।

समय बहुत बड़ा चोर है बहन -भैया
न समझें तो आप सभी की उन्नति चुरा लेगा बहन-भैया।

समय बहुत ही बड़ा बलवान बहन -भैया,
यदि हर क्षण का सदुपयोग किया
तो शिखर पर पहुंचा सकता है बहन-भैया।

वक्त ने जिनको भी बर्बाद किया है बहन-भैया,
वक्त से बदला न तुम लो बहन-भैया।

सुकर्म, धर्म, परोपकार, करते रहो वक्त बहन- भैया,
इसी ताकत से समय को बदल डालो बहन -भैया ।

नया सेल --प्रतिभाशाली
बंद सेल --बुद्धि बल, प्रतिभा और ताकत
वक्त से बदला --हर स्थिति में सतर्क रहें

## मन का कथन

बातें बयां होती हैं आंखों ही आंखों में,
दर्द बयां होते हैं खामोश जुबां से।
दर्द -ए-जिस्म नहीं होता है खरोंचों
से,
इंतिहा होती है लोगों की बदजुबानी से।

पशु भी नहीं सुरक्षित इन हब्शी शैतानों से,
रावण भी शर्मशार है इन शैतानों के शहंशाहों से।

न रिश्तेदार, मित्र, और परिजन बुरे होते
सिर्फ सोच, गलतफहमियों से रिश्ते बुरे होते।

न वर्ग,वर्ण,जाति, धर्म,भाषा बुरे होते,
ये बहुत बुरे होते जब शैतान खुराफात करते।

मयस्सर नहीं हैं खुशियां लोगों की जिंदगी में,
इसका भी बड़ा कारण खुद इंसान ही हैं होतें।

जहन्नुम और जन्नत लोगों को जिंदगी में,
नसीब होते केवल कुकर्मों और सुकर्मों से।

दुस्साहसी नहीं तुम साहसी बनो ऐसे,
यदि मौत भी आये तो स्वागत करो मेहमान जैसे।

हे कर्मवीरों! ज्यादा स्वर्गभोगी न बनें,
कब्र न दुबक कर बैठो पुनर्जन्म लो इंसान बनके।

वादाखिलाफी न करो वर्ग,जाति,धर्म और देश से,
कर्मवीरों की संतानों कर्मवीर बनकर उभरें।

शैतानों के शहंशाहों और उनके हुक्मरानों पे,
दहाड़ो,गरजो और बरसों घनघोर घटा जैसे।

यदि फिर भी ये न माने उनके टुकड़े करो ऐसे,
बम फटने के बाद उसके बिखरते जैसे तिनके।

## अर्थ हीन स्वर और व्यंजनों का महत्व

भारत माता के माथे पर बड़ी बिंदी महत्वपूर्ण है,
भारत वासियों की जिह्वा पर ≤हिंदीः महत्वपूर्ण है।

स्वरों और व्यंजनों के मिलाप से शब्द बनते महत्वपूर्ण है,
अ से लेकर ज्ञ तक सभी अक्षर अति महत्वपूर्ण है।

उनमें भी अः,ड़,ण, अक्षर अति महत्वपूर्ण है।
नम में अः के मुक्त होने से परमेश्वराय नमः महत्वपूर्ण
है,

आत्मशुद्धि के लिए प्रभु वंदन महत्वपूर्ण है।

घ में ड़ के मिलने से ही घड़ा शब्द परिपूर्ण है,
ग्रामीणों की प्यास बुझाने में देशी फ्रिज महत्वपूर्ण है।

व में यं के लगने से ही व्यंजन
शब्द महत्वपूर्ण है,
व्यंजनों के साथ ही व्यंजन महत्वपूर्ण है।

व में ण के युक्त होने से ही वीणा और वाणी शब्द
अर्थपूर्ण है,

विद्या बुद्धि की प्राप्ति में वीणा वादिनि महत्वपूर्ण है।
सुसम्बंधों की प्राप्ति में मृदवाणी महत्वपूर्ण है।

व्यंजनों -- नाना प्रकार के सुस्वादिष्ट खाद्य पदार्थ
व्यंजन ---ज्ञान की प्राप्ति

## माता पिता का महत्व

माता -पिता शारीरिक अंग दिमाग के समान हैं,
ये न हो तो शरीर पंगु हीनता का शिकार है।

ये दोनों शारीरिक अंग दंत जीभ के समान हैं,
इनके बिना मनुष्य नरम और स्वादहीनता का शिकार
है।

ये दोनों शारीरिक अंग पूरे मुख के समान हैं,
ये न हो तो मनुष्य प्रारंभिक पहचान हीनता का शिकार
है।

ये दोनों शारीरिक अंग हृदय के समान हैं,
ये न हो तो मनुष्य प्राणहीनता का शिकार है।

ये दोनों शारीरिक अंग पाचनतंत्र के समान हैं,
ये न हो तो मनुष्य बुरी चीजें सीखने रखने और संगत
का शिकार है।

ये दोनों शारीरिक अंग फेफड़ों के समान हैं,
ये न हो तो मनुष्य शुद्ध वातावरण हीनता का शिकार
है।

ये दोनों शारीरिक अंग नेत्रों के समान हैं,
ये न हो तो मनुष्य दृष्टिहीनता का शिकार है।

❖ कवितायें

## साधना खरे

ये दोनों शारीरिक अंग   नाक-कान  के समान हैं, श्वांस न लें सकते ,
ये न हो तो मनुष्य का हृदय भी बेकार है।

ये दोनों शारीरिक अंग हाथ के समान हैं,
ये न हो तो मनुष्य अस्थिरता/कर्महीनता का शिकार है।

ये दोनों शारीरिक अंग रीढ के समान हैं,
ये न हो तो उठना,बैठना,चलना,फिरना बेकार है।

माता पिता शारीरिक अंग पैरों के समान हैं,
ये हम सबके लिए मार्गदर्शन दाता समान हैं।

माता बच्चों के लिए प्रथम शिक्षिका समान है,
तो पिता एक विद्यालय संगठन के समान हैं।

जीवन में ईश्वर दर्शन पाना कठिन काम समान हैं,
माता,पिता और गुरु देव ही भगवान समान हैं।

दृष्टि हीनता --आस पास,घर परिवार समाज और देश में गलत सलत बातें न देख,सुन और समझ पाना

नाक --- मां -पिता की शिक्षा प्रद बातें और स्वयं के कर्म से समाज में इज्जत बनती है

श्वांस न ले सकते ---घर -परिवार और और समाज
के तौर-तरीकों को माता पिता ही बच्चों को सिखाते है
ताकि बच्चे सम्मान के साथ सांस ले सके

जीवन वृत्त

## साधना खरे

पिता का नाम-- -स्वर्गीय श्री सुरेश प्रसाद खरे
माता का नाम --- स्वर्गीय लक्ष्मी खरे
पति का नाम --- श्री मुकेश कुमार खरे
पुत्र का नाम ---- पुष्कर पटेल
जन्म स्थान ---- शखैय्यापुरा, बहराइच उत्तर प्रदेश
ससुराल पक्ष का पैतृक गांव--भवानीपुर, पोस्ट -चांदोपारा, तहसील --हंडिया, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
नगरीय निवास -- ७५८,१०ँ/१
हर्षवर्धन नगर , मीरापुर, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
जन्म तिथि --- ३०/०६/१९७२
शिक्षा ----बी . ए. शास्त्रीय संगीत में

### साहित्यिक उपलब्धियां एवं प्रकाशन

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं कविताएं

❖ लघुकथायें

साधना खरे
कवयित्री

## आपसी फूट और एकता का फल

एक शहर का एक छोटा सा मोहल्ला था। इसमें अमीर, निर्धन, विकलांग, अलग-अलग शारीरिक बनावट --लम्बे नाटे,मोटे, पतले , काले गोरे, अलग-अलग धर्म और बहु भाषा भाषी के लोग रहते थे। किंतु इनमें एक समानता थी और वह थी आपसी सहमति,सहयोग,प्यार, सहिष्णुता भ्रातृत्व और सद्भावना। बहुभाषा भाषी एक दूसरे की भाषा को सीखने का  हर संभव प्रयास करते थे।हर एक --हर धर्म के उत्सवों और त्यौहारों में बढ़ चढ़कर भाग लेता था।

एक दिन इस सुन्दर समुदाय पर कुछ कपटी और साम्प्रदायिक तत्वों की बुरी नजर पड़ गई। इन सबमें आपसी फूट डालकर इन्हें परस्पर विरोधी बना दिया। लम्बे ने नाटे को जब हर दिन चिढ़ाना शुरू किया तो दुर्भावना वश नाटे ने  उस पेड़ की शाखाओं को ही काट दिया जिस पर लटक कर उसने लम्बाई बढाई थी। पतले ने जब मोटे को चिढ़ाना शुरु किया तो मोटे ने पतले के जिम में ट्रेनिंग लेकर उसकी फीस हजम कर ली यह कहकर कि उसे कोई लाभ नहीं हुआ।

पतले ने मोटे होने के उसके होटल काफी समय स्वास्थ्य वर्धक खाना खाया और जूस पिया किंतु पेमेंट न करने के बहाने बनाता रहा। निर्धनों ने धनवान से प्रतिस्पर्धा में खुद को भारी ऋण में डुबो दिया। कालों ने गोरे होने के लिए कास्मेटिक उत्पादों पर बहुत खर्च कर त्वचा सम्बन्धी रोग उत्पन्न कर लिया और अपनी असली रंगत खो दिया। बहुभाषी लोग एक दूसरे की भाषा का मज़ाक़ उड़ाने लगे।एक दूसरे के उत्सवों और त्यौहारों में बाधा डालने लगे। विकलांग श्रेणी वाले अपने वर्तमान से संतुष्ट हो इन सभी को समझाने का बहुत प्रयास किया।

नाटा लंबा हो नहीं पाया। पतले ने मोटे होने के चक्कर में खुद को पेट का रोगी बना लिया। मोटे ने जिम में गलत सलत अभ्यास कर खुद को हड्डियों और मांसपेशियों में खिंचाव का रोगी बना लिया। धनवान अपनी मौज मस्ती में रहता किंतु निर्धनों ने धनवानों की बराबरी के चक्कर में खुद को डिप्रेशन और उच्च रक्तचाप का रोगी बना लिया। बहु भाषा जानने,बोलने और लिखना सीखने का सुअवसर खो दिया।आपसी मतभेद और फूट के कारण एक दूसरे के धार्मिक उत्सवों और त्यौहारों का आनंद खो दिया। विकलांगों की बात को अस्वीकार करने का परिणाम शनैःशनैः इन सबको समझ में आने लगा।ऽडसुबह का भूला शाम को लौटाऽड वाली कहावत पर अमल कर इन सभी ने आपसी मतभेद, कलह,द्वेष कटुता, वैमनस्य और ईर्ष्या का भाव मिटाकर एक दूसरे से अपनी अपनी गलतियों की क्षमा मांग ली। एक दूसरे से सदैव मिल जुलकर और प्यार से रहने की शपथ ली। अब सभी लोगों का हर दिन होली, नवरात्रि,दिवाली, प्रकाश पर्व ईद, शब्बेरात और बारावफात बन गया। आंतरिक गुणों को निखारकर वाह्य जगत में बुराइयों को दूर कर पुस्तकीय और तकनीकी ज्ञान का प्रकाश फैलाना और मानव धर्म का प्रचार प्रसार ही इस कहानी का वास्तविक उद्देश्य है।

## झूठ बड़ा या सत्य

हर शहर में दस दिवसीय गणपति महोत्सव और दुर्गा पूजा महोत्सव अत्यंत हर्षोल्लास से मनाया जाता है एवं मूर्ति विसर्जन का जुलूस शांति और उल्लास निकलता रहता है ।प्रशासन और शांति कमेटियां हमेशा इस मौके पर बहुत सतर्क रहता है ।एक बार एक शहर में देवी दुर्गा मूर्ति विसर्जन का जुलूस शहर के हर मुख्य सड़क मार्ग से निकल रहा था। भक्ति से परिपूर्ण भक्त भजन कीर्तन और हर भगवान के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। तभी विसर्जन जुलूस और देवी दुर्गा जी की मूर्ति पर अराजक और साम्प्रदायिक तत्वों की तरफ से बवाल मचा दिया गया। पत्थर फेंके जाने लगे। भारी मात्रा में कुछ अराजक तत्वों की भीड़ अस्त्र-शस्त्र लेकर विसर्जन जुलूस की ओर बढ़ने लगी ।भीड़ में कुछ लोगों की  हत्या कर दी गई और बहुतों को घायल कर दिया। प्रशासन और शांति कमेटियां हर सम्भव दंगाई भीड़ को रोकने का प्रयास कर रहे थे।  दंगाई भीड़ ने कुछ लोगों को मार डालने के लिए दौड़ा लिया। ऐसे कुछ लोग जो शहर में नशे के लिए कुप्रसिद्ध थे - दंगाई भीड़ की तरफ आ रहे थे और जोर जोर से शोर मचा रहें थे कि अरे दोस्तों जिन  लोगों को तहस -नहस करने आप सब इधर आ रहें हैं वे सब दूसरे रास्ते वाली सड़क पर भागी  जा रही है आप सब अपना समय और नष्ट नहीं करो । जब दंगाइयों ने दोस्तों शब्दों को सुना तो उन्हें लगा कि यह हम सबमें से एक है और वे सब दूसरे रास्ते पर मुड़ कर चल दिए। इन तथाकथित बदनाम लोगों ने दंगाइयों का पथ भ्रमित कर दिया और एक झूठ के कारण काफी लोगों के प्राण बच गए। जिस तरह दंगाई भीड़ चल दी, सड़क   के दोनों ही छोरों से सशस्त्र पुलिस बल आ पहुंचे और सभी को गिरफ्तार कर लिया गया। यहां पर इस तरह का झूठ सत्य से बड़ा और महान बन गया।

## जगत का स्वभाव

एक छोटे से गांव में एक प्रौढ़ दम्पति रहते थे। श्यामू के पास बहुत थोड़ी सी खेती योग्य भूमि थी और एक बूढ़ा हो चुका बैल था।

केवल खेती से परिवार का पालन करने में कठिनाईयों के कारण वह शहर में जाकर दिहाड़ी मजदूरी कर लेता था। श्यामू की पत्नी मुनिया बहुत ही सीधी सरल दुनियादारी से परे थी। एक बार उसने अपने पति से दुनिया के स्वभाव के बारे में पूछा। तब पति ने पत्नी से कहा कि हम दोनों गांव से बाहर घूमने चलते हैं। बूढ़े बैल के साथ दोनों पैदल निकल पड़े। कुछ लोगों ने इन दोनों की तरफ देख कर कहा कि यह दोनों कितने मूर्ख हैं जो बैल होकर भी पैदल चल रहे हैं। फिर श्यामू ने मुनिया को बैल पर बैठा कर खुद पैदल चल दिया। थोड़ी दूर ही वे सब चले कि कुछ लोग स्त्री को खरी खोटी सुनाने लगे कि देखो तो सही यह कितनी स्वार्थी है खुद बैल पर सवार है और बूढ़े पति देव को पैदल चला रही है। ऐसा सुनकर वह मुनिया बैल से नीचे उतर गयी और श्यामू को बैल पर बैठा दिया और खुद उनके साथ साथ धीरे-धीरे चलने लगी। अभी थोड़ा सा ही रास्ता चलने पर कुछ लोग श्यामू पर तंज कसने लगे कि देखो तो तनिक पुरुष होकर खुद बैल पर सवार है और अपनी कोमल पत्नी को पैदल चला रहा है। श्यामू ने बैल से नीचे उतर कर अपनी पत्नी मुनिया को बैल पर बैठा कर खुद भी बैल पर सवार हो गया और शहर जाने वाले मार्ग की तरफ बढ़ने लगे। जैसे ही वे दोनों सड़क मार्ग के थोड़ा पहले पहुंचे तो उन दोनों को बैल पर सवार देख लोगों ने अपशब्द कहने शुरू कर दिए कि ये दोनों ही कितने निर्दयी और स्वार्थी हैं जो दोनों ही अपना भारी वजन बूढ़े हो चुके बैल लादे हैं।

अब दोनों ही बैल से नीचे उतर कर आ गये और मुनिया अब तक जारी लोगों की बातें सुनकर रोने लगी और शहर घूमने से मना कर दिया। तब श्यामू ने मुनिया को समझना शुरु कर कि कुछ करो, कुछ भी न करो, कितना अच्छा काम करो और किसी भी तरह से काम करो यह दुनियां सदैव  कमी ही निकालती है और समय व परिस्थितियों को नहीं समझती है। यहीऽडऽडजगत का स्वभावऽडऽड है। अतः अपनी खुशी के साथ ही समाज के कल्याण के लिए सही गलत का विचार कर अच्छा काम करते रहना चाहिए।।

❖ पृष्ठ १ का शेष

## आत्म संघर्ष...

छोटे- बड़े लेख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, फेसबुक और डेली हंट समाचार पत्र में डालने लगी। सभी स्वीकृत और प्रकाशित हुए । अब भी समय समय पर छोटे बड़े लेख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक और डेली हंट पर डाल रहीं हूं। जब तक पिता जी अक्टूबर 2017 तक जीवित रहे लेखन में उनसे समय समय पर निर्देश लेती रही और प्रेरित होती रही। पिता जी के देहांत के बाद उनका एक और भजन संग्रह दिल्ली से प्रकाशित हुआ। उनके द्वारा सृजित बाल कविता संग्रह और हास्य व्यंग कविताओं का संग्रह अप्रकाशित ही रह गया।  काव्य विधा लेखन में मेरा प्रवेश 2017 में हुआ। हमारे परिवार के बच्चों और मेरी बड़ी बहनों वंदना और अर्चना खरे दीदी आदि निरंतर साहित्य सृजन हेतु प्रेरित कर रहें हैं। राष्ट्रीय शहर समता विचार मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष, संरक्षक और साहित्य के क्षेत्र में बड़े भाई तुल्य आदरणीय उमेश भैया जी, राष्ट्रीय महिला रचनाकार मंच की अध्यक्ष बड़ी बहन समान रचना सक्सेना दीदी और शहर समता विचार मंच महिला काव्य गोष्ठी गोंडा इकाई की अध्यक्ष छोटी बहन विभा श्रीवास्तव आदि के निरंतर सानिध्य और प्रेरणा से लेखन में निरंतरता व निखार आता गया। मेरे पति देव जी को साहित्य और लेखन में बिलकुल भी रुचि नहीं थी और न है। किंतु इनकी अनदेखी भी मेरे लेखन को निरंतर प्रेरित करती रही और लेखनी को धार देती रही। वर्तमान में मैं अपने पति देव जी के साथ हर्षवर्धन नगर मीरापुर प्रयागराज में निवास कर रही हूं।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो -  सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, -     91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़  सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो -  सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - त्र-तुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धम्तरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैगलूरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो  - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डाँ राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
संजय सक्सेना
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट
आकाश की ऊंचाई-स्पष्ट संदेश
विकसित भारत-विकसित उत्तर प्रदेश
₹11,200 करोड़ की लागत से तीव्र कनेक्टिविटी देने वाले अत्याधुनिक ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट
नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (प्रथम चरण) का
उद्घाटन
नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
के द्वारा किया गया
उत्तर प्रदेश की उड़ान – पूरे भारत की शान
• भारत की सबसे बड़ी ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट परियोजनाओं में एक
• सड़क, रेल, मेट्रो और क्षेत्रीय परिवहन प्रणालियों के बीच निर्बाध एकीकरण वाला मल्टी मोडल ट्रांजिट सिस्टम
• 2.5 लाख+ मीट्रिक टन की वार्षिक क्षमता वाला मल्टी-मोडल कार्गो हब, जिसे लगभग 18 लाख मीट्रिक टन तक बढ़ाया जा सकता है
• राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रवेश द्वार के अनुरूप
• प्रति वर्ष 1.20 करोड़ यात्री क्षमता
• चतुर्थ चरण तक प्रति वर्ष 7 करोड़ तक यात्री वहन क्षमता का विस्तार
• उत्तर प्रदेश की पारंपरिक एवं हवेलियों की थीम पर आधारित साज-सज्जा, वाराणसी एवं हरिद्वार के गंगा घाट की अनुभूति वाली मल्टी लेवल टर्मिनल डिजाइन
• विभिन्न राज्यों के हैंडीक्राफ्ट्स एवं टेक्सटाइल से सौंदर्यीकरण
गरिमामयी उपस्थिति
आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश
योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
किंजरापु राममोहन नायडू
मंत्री, नागर विमानन, भारत सरकार
पंकज चौधरी
राज्य मंत्री, वित्त, भारत सरकार
केशव प्रसाद मौर्य
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
ब्रजेश पाठक
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
बृजेश सिंह
राज्य मंत्री, लोक निर्माण, उत्तर प्रदेश
डॉ. महेश शर्मा
सांसद, गौतम बुद्ध नगर
सुरेंद्र सिंह नागर
सदस्य, राज्य सभा
अमित चौधरी
अध्यक्ष, जिला पंचायत, गौतम बुद्ध नगर
पंकज सिंह
विधायक, नोएडा
तेजपाल सिंह नागर
विधायक, दादरी
धीरेन्द्र सिंह
विधायक, जेवर
संजय कुमार शर्मा
विधायक, अनूपशहर
सुरेन्दर दिलेर
विधायक, खैर
लक्ष्मी राज सिंह
विधायक, सिकंदराबाद
श्रीकान्त शर्मा
विधायक, मथुरा
मीनाक्षी सिंह
विधायक, खुर्जा
राजेश चौधरी
विधायक, मांट
जयवीर सिंह
विधायक, बरौली
नरेन्द्र सिंह भाटी
सदस्य, विधान परिषद
श्रीचंद शर्मा
सदस्य, विधान परिषद
एवं अन्य गणमान्य महानुभाव
दिनांक : 28 मार्च, 2026 | स्थान : जेवर, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
UPGovtOfficial
CMOUttarpradesh
CMOfficeUP